प्राक्कथन

प्राक्कथन

विषयचयन एवं प्रेरणा :

महाविद्यालयीन जीवन से मैं काव्य की ओर आकृष्ट रहा हूँ। 'कामायनी', 'साकेत' आदि काव्यग्रंथों को मैं पढ़ चुका हूँ। काव्य एक ऐसी विधा है, जिसमें कवि कम शब्दों में अपने विचार कलात्मकता के साथ पाठकों तक पहुँचाने की कोशिश करता है। काव्य में संगीतात्मकता, लयात्मकता होने के कारण यह विधा काफी लोकप्रिय हो चुकी है।

मैं भारतरत्न डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के विचारों से काफी प्रभावित हूँ। डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर को केंद्रबिंदू मानकर लिखा गया साहित्य मेरे हर्ष का विषय रह चुका है। इसी दौरान आयुष्यमान रामदास निमेश द्वारा लिखित 'भीमकथाअमृतम्' महाकाव्य मेरे पढ़ने में आया। जब मैंने एम्.फिल. के लिए प्रवेश लिया। तब मुझे ज्ञात हुआ कि, किसी विषय को लेकर एम्.फिल. के लिए लघु शोध-प्रबंध लिखना पड़ता है। तब मैंने रामदास निमेश द्वारा लिखित 'भीमकथाअमृतम्' काव्य को चुना। प्रस्तुत विषय लेकर मैं जब गुरूवर्य डॉ. सावंत जी से मिला तब उन्होंने इस विषय को लेकर मार्गदर्शन करने की अनुमति दे दी।

प्रस्तुत लघु शोध कार्य के लिए प्रेरणा देनेवालो में गुरूवर्य डॉ.पद्मा.पाटील जी, डॉ. अर्जुन चव्हाण जी, मेरे माता-पिता, भाई, बहन, मित्र आदि का नाम उल्लेखनीय हैं।

विषय की मौलिकता :

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विषय "भीमकथाअमृतम् काव्य का अनुशीलन" अपने आप में मौलिक है। 'भीमकथाअमृतम' महाकाव्य में कुल मिलाकर नौ स्कन्ध (सर्ग) है। इस महाकाव्य में भारतरत्न डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के बचपन से लेकर महापरिनिर्वाण तक की जानकारी प्रस्तुत की है। इसको अनुशीलन की दृष्टि से एक सूत्र में बाँधना प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की मौलिक विशेषता कही जा सकती है।

विषय का महत्त्व :

हिंदी अनुसंधान में बदलते परिवेश के साथ विषय भी बदल रहे हैं। नई समस्याएँ सामने आ रही हैं। 'भीमकथाअमृतम' महाकाव्य में डॉ. बाबासाहव अम्बेडकर को

अपने जीवन में आयी कठिनाइयों का तथा तत्कालीन युग की समस्याओं का वर्णन मिलता है। ऐसे नए विषय को लेकर लिखे गए इस महाकाव्य पर अनुसंधान नहीं हुआ है। मेरे प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की रचना इस अभाव की पूर्ति का सविनय प्रयास है।

अनुसंधान के पूर्व मेरे समक्ष निम्नलिखित प्रश्न थे :

"भीमकथाअमृतम् काव्य का अनुशीलन" विषय पर अनुसंधान के पूर्व मेरे समक्ष निम्नलिखित प्रश्न उपस्थित थे।

प्रश्न **1** : रामदास निमेश का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व किस प्रकार का रहा है ?

प्रश्न **2** : 'भीमकथा' पर आधारित अन्य काव्यग्रंथ कितने लिखे गए है ?

प्रश्न **3** : विवेच्य काव्य का कथ्य क्या है ?

प्रश्न **4** : विवेच्य काव्य ग्रंथ महाकाव्य के तत्त्वों के आधार पर खरा उतरता है या नहीं ?

प्रश्न **5** : विवेच्य काव्यग्रंथ का वैचारिक पक्ष क्या रहा है ?

समग्र अध्ययन के उपरांत जो उत्तर प्राप्त हुए हैं, वे लघु शोध-प्रबंध के उपसंहार में प्रस्तुत किए है।

शोध-प्रबंध की व्याप्ति :

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध "भीमकथाअमृतम् काव्य का अनुशीलन" शीर्षक से संपन्न हुआ है। अध्ययन की सुविधा हेतु मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित कर प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विवेचन तथा विश्लेषण किया है।

प्रथम अध्याय : "रामदास निमेश का व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व"

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत निमेश जी के व्यक्तित्त्व का सामान्य परिचय दिया है। इसमें उनका जन्म, माता-पिता, बचपन, शिक्षा, नौकरी, विवाह, संतानें, प्रेरणास्त्रोत, कार्य आदि का विवेचन-विश्लेषण किया है। साथ ही कृतित्त्व में उनके साहित्य संसार की जानकारी दी हैं। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं।

द्वितीय अध्याय : "भीमकथा पर आधारित अन्य काव्य ग्रंथ"

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत डॉ. अम्बेडकर के जीवन पर आधारित अन्य काव्य ग्रंथों की जानकारी दी है। इसमें 'भीम-सागर', 'भीम-चरित मानस', 'भीम-शतक', 'अम्बेडकर-शतक', 'भीमो-उत्स्वर', 'भीम-भारती', 'भीमायण', डॉ.अम्बेडकर जीवन चरित्र प्रथम भाग और द्वितीय भाग 'भीम प्रशस्ति', 'अम्बेडकर', 'भीम चेतावनी', 'क्रांतिदूत अम्बेडकर' आदि काव्य ग्रंथों का संक्षेप में परिचय दिया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए है।

तृतीय अध्याय : "भीमकथाअमृतम् का सामान्य परिचय"

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत विवेच्य महाकाव्य की नौं सर्गों में विभाजित कथावस्तु का संक्षिप्त रूप में विवेचन किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं।

चतुर्थ अध्याय : "महाकाव्य के तत्त्वों के आधार पर विवेच्य काव्य का अनुशीलन"

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत महाकाव्य का स्वरूप, परिभाषा, तत्त्व आदि को स्पष्ट करते हुए विवेच्य महाकाव्य का तत्त्वों के आधार पर विश्लेषण किया है। इसमें महाकाव्य की कथावस्तु, नायक तथा अन्य पात्रों का विश्लेषण, वीर, करूण, शृंगार, वात्सल्य आदि रसों का वर्णन, दोहा, चौपाई, तुकांत आदि छंदों की जानकारी, रूपवर्णन, प्रकृति चित्रण, ऋतुवर्णन, भाषा में विविध शब्दों का प्रयोग, नामकरण, उद्देश्य से संबंधित सारी जानकारी का विवेचन तथा विश्लेषण किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्षों को दर्ज किया गया है।

पंचम अध्याय : "विवेच्य काव्य का वैचारिक पक्ष"

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत महाकवि निमेश जी द्वारा वर्णित सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षिक आदि विचारों से संबंधित जानकारी प्रस्तुत की है।

प्रस्तुत विचारों के अंतर्गत जातिव्यवस्था, वर्णव्यवस्था, छुआछूत प्रथा, सामाजिक विषमता, अछूतों की स्थिति, नशा-पान, राजनीति में दलितों को आरक्षण, चुनाव में व्याप्त भ्रष्टाचार, हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, सर्वधर्म समभाव, आदर्श धर्म, धर्म परिवर्तन, मजदूरों की स्थिति, दलितों का शिक्षाधिकार, नारी शिक्षा आदि से संबंधित विचारों का विवेचन तथा विश्लेषण किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष अंकित किए है।

उपसंहार :

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में पूर्व नियोजित अध्यायों का शास्त्रीय, वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक पद्धति से अध्ययन करने के उपरांत जो समन्वित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं उनको उपसंहार में दर्ज किया है। अंत में परिशिष्ट, आधार ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता :

1. "भीमकथाअमृतम् काव्य का अनुशीलन" यह लघु शोध-प्रबंध स्वतंत्र रूप से प्रथमत: ही संपन्न हुआ है।
2. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में रामदास निमेश जी के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है।
3. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में महाकाव्य के तत्त्वों के आधार पर विवेच्य काव्यग्रंथ का सफलता से विवेचन-विश्लेषण किया है।
4. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में महाकवि निमेश जी के विवेच्य महाकाव्य में वर्णित सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षिक आदि विचारों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।